रूहानी सत्संग No. K-17

हम अंधुले अंध बिख बिख राते

(1) हम अन्धुले अन्ध बिखे बिख राते क्यों चालें गुर चाली॥

दुनिया में आम कहावत है, बाबा आखें बड़ी नियामत हैं। इस बात की कद्र वही जान सकते हैं जिनके आँखें नहीं। जिन के आंखें हैं उन्हें क्या कद्र हो सकती है इस की। जिन के आंखें नहीं हैं उन से पूछो आंख की कीमत क्या है? परमात्मा न करे थोड़ी देर के लिए नज़र बन्द हो जाये तो दुनिया हमारे लिये अंधेर हो जाए। अब आँखें बन्द करें, अन्दर अंधेरा है क्योंकि हमारे अन्तर के नेत्र बन्द हैं, मगर क्या हमें इस बात का ज़रा भी अफसोस है? बाहर दो मिनट के लिए भी हमारी नज़र बन्द हो जाए तो हम घबरा उठते हैं।

महात्मा कहते हैं कि अन्तर में प्रकाश है। अन्दर खंड ब्रह्मंड हैं। हम आंख बन्द करते हैं तो अंधेरा है लेकिन हम कभी इस बात पर घबराये? महात्मा के अन्तर के नेत्र खुले हैं, वे अन्तर गुरु के दर्शन करते हैं। वे देखते हैं कि अन्तर में कई दुनियाएं आबाद हैं। ''अन्तर ज्योति में संयम करने से सिद्ध पुरुषों के दर्शन होते हैं'' – यह शास्त्र कहते हैं। यह सब कुछ हम पढ़ते हैं मगर हमारी अन्तर की आँख बन्द है। कभी अफसोस हुआ हमें इस बात पर? दूसरी बात यह है कि जिन की अन्तर की आंखें खुली हैं और जिन की बन्द हैं, उन में भारी फर्क है। जो खुली आंख वाला देख सकता है बन्द आंखों वाला क्या उसे देख सकता है? गुरु की आंख खुली है। वह हम से कुछ काम कराना चाहता है। वह क्या काम है? कि दुनिया से इस की लगन, इस की तवज्जो (ध्यान) हट जाए और यह मालिक से लगे मगर जब तक हमारी आंख नहीं खुली, हमें इस बात की समझ नहीं आती। श्री गुरु रामदास जी की आंख खुली थी। श्री गुरु अमरदास जी ने बार बार चबूतरे बनवाए और फिर गिरवा दिये। वे जानते थे गुरु क्या चाहता है। वे बराबर चबूतरे बनाते और गिराते रहे। जिस की आंख खुली हो वही जान सकता है और गुरु की चाल चल सकता है। गुरु जिस चाल पर चलाए वही चल सकता है, दूसरा नहीं। इतिहास बताता है कि श्री गुरु अमरदास जी ने 74 बार चबूतरे बनवाये और फिर गिरवा

दिये। जिनकी आंख बन्दे थी वे हार गये, मगर भाई जेठा जी जो बाद में गुरु रामदास बने, बराबर चबूतरे बनाते रहे। उन के साथी कहने लगे, "यह भी कोई अकल की बात है कि चबूतरे बनवाये और फिर गिरवा दिये?" यह बात सुन कर वे रो पड़े कि गुरु ही एक जागता देव है। अगर उस को अकल नहीं तो दुनिया में अकलमन्द कौन हो सकता है? उन की आंख खुली थी वे समझते थे कि गुरु क्या चाहता है? श्री गुरु अमरदास जी की गर्ज़ (ध्येय) यह थी कि जिस बरतन में रूहानियत की दौलत वे डालना चाहते थे उस में मन बुद्धि की ज़रा भी रड़क बाकी न रह जाये। वह अपना आप हवाले कर देता है।

जैसे में आवे खसम की बाणी, तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो॥

जो हवाले हो जाये उसके, जिस की यह अवस्था है वही पा सकता है इस दौलत को। सो फरमाते हैं श्री गुरु अमरदास जी कि दुनिया अन्धी है। गुरवाणी में अन्धे की यह तारीफ की गई है।

अन्धे से ना आखियन जिन मुख लोईण नाहिं॥
अन्धे से ई नानका जे खस्मों कुत्थे जाहिं॥

अर्थात् अन्धे वे नहीं जिन की आंखें नहीं हैं। अन्धे वे हैं जिसकी अन्तर की आंख बन्द है। आंख बन्द करते हैं तो आगे अंधेरा है, वे अन्धे हैं। अब बताओ दुनिया में कितने सुजाखे (आंख वाले) हैं? स्वामी जी महाराज फरमाते हैः

गुरु कहें जगत सब अन्धा, कोई गहे न घट की सन्धा॥

फरमाते हैं कि अन्तर में पिंड से अंड और ब्रह्मंड और इस के पार जो रास्ता जाता है वह नज़र नहीं आता, इस लिए दुनिया सब अंधी है। यह दरवाज़ा है जिसके बारे में गुरवाणी में आया हैः

अन्धे दर की खबर न पाई॥

सो फरमाते हैं कि हम अन्धे हैं। अन्धे ही नहीं अन्धों के अन्धे हैं। इस का कारण क्या है? हम मन-इंद्रियों के रसों-भोगों में लम्पट हो रहे हैं। हम पर माया की ज़हर चढ़ गई है इस लिए हम अन्धे हैं। हमें कुछ सूझता नहीं। अब जिसे ज़हर चढ़ जाए उस की क्या हालत होती है? उस का दिमाग ठिकाने नहीं रहता, आंख बन्द हो जाती है, दिल डोलता है। अब जिस का दिमाग, जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो बताओ वह कैसे राह पर चल सकता है? हम वैसे तो बहुत अकलमंद बनते हैं लेकिन माया

की ज़हर हम पर चढ़ी हुई है। अपनी ज़हरालूद (ज़हर चढ़ी हुई) बुद्धि से हम गुरु के वचनों को परखना चाहते हैं, इस लिए गलती खा जाते हैं। तो जब संगत ने जेठा जी से कहा कि श्री गुरु अमरदास जी की बुढ़ापे में अकल ठिकाने नहीं रही तो उन की बुद्धि ज़हरालूद (ज़हर चढ़ी हुई) थी। आज भी वही हालत है। हम विषय विकार में लम्पट हो रहे हैं, न दिल सलामत है हमारा, न दिमाग, ऐसी हालत में जिस राह पर गुरु चलाना चाहता है हम उस राह पर कैसे चल सकते हैं?

अन्तर आंखें सब की हैं, बाहर की आँखें चाहे न भी हों। कई अंधों को यहाँ उपदेश दिया गया तो उन्होंने अन्तर में प्रकाश देखा। शम्स तबरेज़ साहब फरमाते हैं, ''हम ने कई मादरज़ाद (जन्म के) अन्धों को आँखें बख्श दी हैं।'' यह अन्तर की आंख का खोलना समर्था है पूर्ण पुरुष की। उसकी खास बख्शिश है। सो फरमाते हैं श्री गुरु रामदास जी कि हम अंधों के अंधे हैं। इंद्रियों के रास्ते हमें माया की ज़हर चढ़ गई है जिस का नतीज़ा यह है कि हमारा दिल सलामत है न दिमाग। ऐसी हालत में हम गुरु की रज़ा पर कैसे चल सकते हैं? यह ज़हर उतरे तो हम गुरु की रज़ा पर चलें। हमारी गति क्या है? गुरु जागता पुरुष है। उस की आंखें खुली हैं। हम आंख रखते हुए भी अंधे हैं। हमारी अन्तर की आँख नहीं खुली।

(2) सत्गुरु दया करे सुखदाता, हम लावे आपन पाली।।

हम तो है ही अंधे, अन्धों को कोई क्या कहे? सत्गुरु जागता पुरुष है। वह दया का पुंज है, दया का समुद्र है। हमें इस अधोगति में देख उसे रहम आता है हमारे हाल पर। हमें भी कोई अन्धा नज़र आ जाए तो क्या करते हैं? वह लड़खड़ाता है तो बांह पकड़ कर हम उसे सहारा देते हैं, आगे ले चलाते हैं, यह कुदरती बात है। अन्धा अगर गाली भी दे तो वह उस को नज़र अंदाज (आंख फेर लेना, ध्यान न देना) कर जाता है। जैसे भी हो उसे सीधे रास्ते पर डाल देता है। इसी तरह आंख वाले को हम अंधों की हालत पर रहम आ जाता है। सत्गुरु तो सुख का सागर है। उस का काम ही है सुख पहुंचाना। आंख वालों को तो सुख होता ही है। वह अंधों को भी चाहे वह उस की बात को किसी मायने में ले, दया करके अपनी पाल में डाल देता है। वह Out of compassion दया से आतुर होकर, हम पर रहम खाकर हमें उठाता है। लोग समझते हैं कि इसमें भी उस की कोई गर्ज़ होगी।

ऐ खुदा बिगुमार कौमे रहम मन्द, ता जे सन्दूके बदन मारा खरन्द।

मौलाना रूम प्रार्थना करते हैं कि ऐ खुदा, दयाल पुरुषों को भेज ताकि उन्हें हमारी हालत को देख कर हम पर रहम आए। सख्त दिल तो बड़ी दुनिया पड़ी है। वह (दयाल पुरुष) देखते हैं कि इन बेचारों की तो आंखें बन्द हैं। किसी भी हीले हवाले से, जैसे भी हो इन्हें इस जिस्म के जादू भरे सन्दूक से निकाले ताकि इन्हें कुछ अपनी होश आए। सो श्री गुरु अमरदास जी बड़े सुन्दर शब्दों में बयान कर रहे हैं कि शिष्य जब गुरु के चरणों में आता है तो वह दया करके उसे अपनी पाल में डाल देता है। हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज से किसी ने कहा कि आप के पास जो आता है आप उसे नाम बख्श देते हैं, क्या कीमत है नाम की? हज़ूर ने फरमाया कि जब कोई आतुर होकर मांगता है तो यही कीमत है नाम की। वह दया के काबिल है। हज़ूर एक बार हमारे गांव सैयद कसरां गए। वहां का हैड मास्टर बोला कि हज़ूर आप किसी अधिकारी को नाम देकर रास्ते पर डालें वह तो ठीक है मगर आप तो अधिकारी अनाधिकारी का ख्याल किये बिना जो भी आए उसे नाम दे देते हैं? सन्तों की निराली शान होती है। नम्रता सन्तों का शृंगार है। हज़ूर ने फरमाया, "भई अधिकारी की बात करो तो अधिकारी मैं भी नहीं मगर एक आदमी अपनी दौलत लुटाना चाहता है तो बताओ तुम्हें क्या एतराज़ है?" इस चीज़ की कद्र उस से पूछो जिस की आंख खुल जाए। सत्गुरु के पास जाने से पहले चाहे इन्सान कितना ही आलम फाज़िल (विद्वान) हो उस की अन्तर की आंख बन्द होती है। वहाँ आने के बाद आंख खुल जाती है। सो गुरु दया करके हमें अपनी पाल में रख लेता है। मुफ्त की सरदर्दी वह मोल लेता है। यह उन का बिरद है, जो शरण में आ गया वह दया करके उसके सिर पर हाथ रख देता है। फूल की खासियत (गुण) है खुशबू देना। वह सबको खुशबू देता है। सन्त दया का भंडार होते हैं। वे हम पर रहम खाते हैं। उनकी बख्शिश से ही हम उनके दायरे में शामिल हो जाते हैं वरना अधिकारी का सवाल हो तो यहाँ कोई भी नज़र न आये।

भाई मंझ का वाकेया (दृष्टान्त) है। वह पूरे गांव का मालिक था। गुरु अर्जुन साहब की शरण में आया। उन्होंने फरमाया था कि ईश्वर व्रती

होना पड़ेगा क्योंकि मुक्ति दाता केवल परमात्मा है। बाकी देवी देवता अपने अपने दायरे (क्षेत्र) में काम करते हैं, वे मुक्ति नहीं दे सकते। वह किसी देवता का पुजारी था। उसकी पूजा छोड़ दी, चुनांचे (सो) गरीब हो गये, घरबार सब बिक गया। गुरु साहब ने एक चिट्ठी लिखकर किसी सेवक के हाथ में भाई मंझ को भेजी और साथ कहला भेजा कि 25 रुपये भेटा (भेंट) है इस चिट्ठी की। यह वह वक्त था कि सात आठ आने में नौ दस आदमियों का परिवार महीना भर गुज़ारा कर सकता था। वह इतना गरीब था कि रोटियों का गुज़ारा मुश्किल से चलता था। आज़माईश (परीक्षा) बुरी होती है। घर वाली से सलाह की। उसने कहा, ''जेवर बेच दो।'' चुनांचे जेवर बेच कर चिट्ठी ले ली। उसमें खैर खैरियत (ठीक-ठाक) लिखी थी गुरु साहब ने। इसके बाद गरीबी और बढ़ती गई। तीन महीने बाद दूसरी चिट्ठी गई गुरु साहब की। इसकी भी 25 रुपये भेंट थी। घरवाली और लड़की दोनों को नौकर रख कर 25 रुपये एडवांस लिये। चिट्ठी में लिखा था कि भाई मंझा दरबार में आ जाये। यह वहां गये और लंगर में जूठे बरतन मांजने वगैरह की सेवा करते रहे। दो चार महीने इसी तरह गुज़र गये। एक बार गुरु साहब ने पूछा कि भाई मंझ आया था यहां? लोगों ने कहा, ''वह यहीं है।'' पूछा, रोटी कहां से खाता है?'' लोगों ने कहा, ''लंगर से।'' फरमाया, ''मज़दूरी हुई न। लंगर की सेवा करके रोटी खा ली।'' इनकी (भाई मंझ की) आंख खुली थी, ''बोले ठीक ही कहते हैं।'' यह उन लोगों को होश करनी चाहिए जो लोगों का रुपया खाते हैं। सत्संग का रुपया ज़हर है। अब के भाई मंझ ने यह किया कि जंगल से लकड़ियां काट कर कुछ शहर में बेच डालते, बाकी लंगर के लिये ले आते। एक बार बड़े ज़ोर से आंधी चल रही थी। यह लंगर के लिए लकड़ियों का गट्ठर उठाये चले आ रहे थे कि कुंए में गिर पड़े। गुरु अर्जुन साहब नंगे बांव उठ दौड़े। संगत भी साथ में उठ दौड़ी। कहने लगे, ''रस्से लाओ।'' आप कुंए के किनारे पर खड़े होकर किसी से भाई मंझ को कहलावाया कि छोड़ ऐसे गुरु को जिसने तुझे इस हालत को पहुंचा दिया। तू क्या था और क्या हो गया। वे बोले, ''तुम्हें जो कहना है मुझ से कह लो। मेरे गुरु को कुछ न कहो।'' जब उन्हें बाहर निकालने को रस्सा डाला

गया तो बोले कि पहले लकड़ियाँ निकाल लो। कुंए में गिर कर भी उन्होंने लंगर की लकड़ियों का गट्ठर भीगने नहीं दिया था। आखिर कुंए से बाहर निकले। गुरु अर्जुन साहब दया के समुद्र थे। बोले, "माँग क्या माँगता है?" इन्होंने अर्ज़ किया कि महाराज कलियुग का ज़माना है, जीव परीक्षा के काबिल नहीं रहे। मेरी यही प्रार्थना है कि कलयुग में जीवों की परीक्षा न ली जाए। गुरु साहब ने उन्हें गले से लगा लिया और फरमायाः

मंझ प्यारा गुरु को, गुरु प्यारा मंझ॥
मंझ गुरु दा बोहिथा, जग लंघण हारा॥

कि जिसको तू नाम देगा वह भवसागर के पार हो जायेगा। यह उसकी बख्शिश है कि वह हमें अपने दायरे में शामिल कर लेता है वरना अधिकारी कौन है? खैर जो कपड़ा लांडरी में आ गया वह ज़रूर धुल कर साफ हो जायेगा। पहले कपड़े को पत्थर पर पटक कर साफ करते थे। आज ड्राई क्लीनिंग का ज़माना है। वह दया करके हमें अपनी पाल (शरण) में रख ले तो यह उसकी निरोल बख्शिश है वरना किसी हिसाब से हम इसके काबिल नहीं हैं। हज़रत इब्राहीम अधम एक बार शहर जा रहे थे। देखा, एक शराबी नाली में पड़ा है, कै से उसका मुंह भरा है और कुत्ते मुंह चाट रहे हैं। उसे देख कर इन्हें रहम आ गया। उसका सिर अपनी गोद में रख लिया। रुमाल से उसका मुंह साफ किया। शराबी की आंख खुली, देखा कि बादशाह की गोद में मेरा सिर है। रो पड़ा कहने लगा, "ऐ इब्राहीम अधम मैं वह हूं जिसे कुत्ता भी नहीं सूंघता। आज तेरी गोद में मेरा सिर है।" जीव गंदगी में आलूद (सना हुआ, मलीन) है, कहीं काम, कहीं क्रोध, कहीं और आलायशें (विकार) हैं। ऐसे जीवों को वह अपनी गोद में लेता है। वह कहता है, "तू आ गया? अच्छा चल बैठ जा।" यह खास बख्शिश है उसकी जो वह शिष्य को अपने दायरे में शामिल (सम्मिलित) कर लेता है।

(3) गुरसिख मीत चलो गुर चाली॥ गुरसिख मीत चलो गुर चाली॥

सारा जहान सिख है। दशम् गुरु साहब से पूछा गया कि महाराज सिख की तारीफ (परिभाषा) क्या है। फरमाया, "तुमने अच्छा किया जो मुझ से पूछा है।" आज जो तारीफ है सिख की कि जो गुरु ग्रंथ साहब

को माने वह सिख, जो न माने वह सिख नहीं, यह तारीफ नहीं की। उन्होंने फरमाया कि मेरी नज़र में सारा जहान सिख है क्योंकि हर शख्स पैदायश से मौत के दिन तक शिक्षा धारण करता रहता है, कुछ न कुछ सीखता रहता है। अब यहां सिख का नहीं, गुरसिख का सवाल है कि तुझे पूर्ण महात्मा मिल गया तो क्या कर? उसी का हो कर रह। तू अब गुरु का सिख है, मन का सिख नहीं है, समाज का, स्त्री और बच्चों का सिख नहीं है, अब बताओ ऐसे गुरु सिख कितने हैं?

मन मुरीद संसार है, गुरु मुरीद कोई साध॥

जो गुरसिख बन गया तो अब उसके लिये गुरु का वचन ही वेद है, वही उसकी कुरान है, वही गीता है। सो फरमाते हैं कि ऐ मित्र, तू अब गुरु सिख बन गया, अब गुरु की चाल अख्तियार कर। जो काम उसे भाता है वही काम कर। एक खुशनवीस (सुन्दर लिखाई करने वाला) को वही पसंद आएगा जो खुशनवीस होगा। गुरु की खुशी लेनी हो तो वही गुण धारण करो जो गुरु में हैं। उसमें दयाभाव है, वह निष्काम सेवा करता है, सबसे उसका प्यार है नास्तिकों से भी। हमें भी चाहिए कि ये गुण अपने अन्दर धारण करें।

सत्गुरु ऐसा जाणिये, जो सबसे लये मिलाय जियो॥

वह सबको मिला कर बैठता है, किसी से नफरत नहीं करता, सबसे प्यार करता है। तुम भी division (तोड़ने का) न करो, इन्सानों में तफरीक (भेदभाव) न करो, अलहदगी न करो, दुश्मन से भी प्यार करो तो तुम गुरु के प्यारे हो जाओगे। अगर हम निन्दा बखीली धड़ेबंदी में लगे रहें तो क्या हम उसे भाएंगे? हरगिज़ नहीं। जो तरीका उसकी रहनी का है उसकी नकल करेंगे तो हम उसके प्यारे होंगे। पिता को वे बच्चे ज्यादा भाते हैं जो पिता की आदत (गुण स्वभाव) को अपनाते हैं, जो उसके नक्शे-कदम पर चलते हैं (अनुसरण करते हैं)। आगे बताते हैं कि गुरु क्या कहता है? वह चाल क्या है जिस पर वह हमें चलाना चाहता है?

(4) जो गुर कहे सोई भल मानो, हर हर कथा निराली॥

अब फरमाते हैं कि गुरु मिल जाये तो क्या करो? एक तो यह कि गुरु की चाल को अख्तियार करो। गुरु को लोगों की सेवा करना पसंद

है। तुम भी लोगों की सेवा करो। दूसरी बात यह है कि जो हुक्म वह दे उसमें अपनी भलाई मानो और खुशी से उसकी आज्ञा का पालन करो। वह क्या कहता है? वह कहता है नेक पाक जीवन बसर करो, खयाल में भी मन अपवित्र न हो, किसी का बुरा चितवन न करो, सबसे प्यार रखो। तुम गुरु के वचनों पर फूल चढ़ाओ, जो गुरु कहे उसमें अपनी भलाई समझो और उसके वचनों के मुताबिक अपना जीवन बनाओ। मसीह कहता है: Let my words abide in you and you abide in me.

अर्थात् तुम मेरे वचनों को अपने हृदय में बसा लो तो तुम मेरे हृदय में बस जाओगे, फिर तुम जो मांगोगे तुम्हें मिलेगा। जो गुरु के वचनों पर फूल चढ़ाते हैं, उसके कहने के मुताबिक (अनुसार) अपना जीवन बनाते हैं वे कभी नाकाम नहीं हो सकते। जो गुरु के गुण स्वभाव को अपनाते हैं, गुरु की खुशी हासिल कर लेते हैं।

सत्गुरु वचन, वचन है नीको

सत्गुरु के वचन नेकी के देने वाले हैं बल्कि यहां तक कहा है:

सत्गुरु वचन, वचन है सत्गुर

जो सत्गुरु को माथा टेकते हैं और उसके वचनों पर फूल नहीं चढ़ाते वे उससे दूर रह जाते हैं। हज़ूर फरमाते थे कि गाय के थनों में चिच्चड़ भी लगे रहते हैं जो केवल खून पीते हैं। बछड़ा दूर से आता है और सारा दूध पी जाता है। यहां दूरी नज़दीकी का सवाल नहीं उसके वचनों को पालने का सवाल है, हुक्म मानने का सवाल है। सत्गुरु पूरा मिल गया, तुम जहाज पर चढ़ गये, अब बेफिक्र रहो। वह तूफानों से भी तुम्हें सही सलामत निकालकर पार ले जायेगा। मरते वे हैं जो अपने आप छलांगें लगाते हैं। जिन्हें गुरु मिल गया उन्हें क्या डर है? गुरु गुरु होता है। वेद शास्त्र धर्म ग्रन्थ जो गुरु की महिमा करते चले आ रहे हैं ये ऐसे ही नहीं कर रहे। हज़ूर विषय विकार की गन्दगी में पड़े हुए जीवों को भी खुश होकर मिलते थे। कई भाई कहते हैं कि हम पाप करके जाते हैं तो वह और आदर करता है। उन्हें मालूम नहीं कि यह सन्तों का स्वभाव है कि वह सब से प्यार करते हैं। बच्चा गन्दगी में लिबड़ा हुआ (भरा हुआ) हो

तो माता क्या उससे नफरत करती है? वह उसका मुंह पोंछती है, कपड़े धोती है और फिर प्यार करती है उसे। बात और है पर जिनकी आंखे नहीं हैं उन्हें कुछ और नज़र आता है। वे पापियों पर ज़्यादा दया करते थे कि इन्हें आखिर मैंने ही उठाना है।

मेरे अपने जीवन का एक छोटा सा वाकेया (दृष्टांत) है। एक बार हज़ूर लाहौर तशरीफ लाए, जमाल दीन डेंटिस्ट के यहां। मैं इसी तरह सत्संग कर रहा था। अब हज़ूर आए हों तो किस का जी न चाहेगा दर्शन करने को? इधर सत्संग था, उधर हज़ूर के दर्शनों की बैताबी (तड़प)। हज़ूर का हुक्म था कि सत्संग ज़रूर करना है। एक बार शनिवार के दिन मेरे जी में आया कि हज़ूर के दर्शनों को चलना चाहिए, इतवार को कोई दूसरा सत्संग कर लेगा। रात साढ़े दस बजे डेरे पहुँचा और माथा टेक के हज़ूर के चरणों में बैठ गया, पौन घंटा बातचीत हुई। इसके बाद हज़ूर ने फरमाया कि कल इतवार है, सत्संग है, सत्संग में ज़रूर जाना चाहिए। मैं वहीं से वापस लौट आया और इसके बाद सत्संग का कभी नागा नहीं किया। लड़का बीमार पड़ा, फिर भी सत्संग किया। अब इस मौके पर हज़ूर के हुक्म का ख्याल करके मैंने सत्संग जारी रखा। सत्संग खत्म करके मैं भागा भागा वहाँ पहुँचा तो हज़ूर जा चुके थे। अब मेरे मन में बड़ी तशवीश थी कि क्या मैंने ठीक किया कि सत्संग जारी रखा और हज़ूर के दर्शनों को न गया। डेरे जाकर हज़ूर से पूछा तो फरमाया, "तूने ठीक किया जो वचनों पर फूल चढ़ाए।" सभी महात्मा इस बात पर ज़ोर देते चले आ रहे हैं।

बमैं सज्जादा रंगी कुन गरत पीरे मुगां गोयद

अर्थात् मुर्शिद (गुरु) हुक्म दे तो मुसल्ले को शराब से रंग दे। अब शराब बड़ी गंदी चीज़ है, शरीयत ने इसे हराम कहा है। और वह मुसलमानों का राज्य था। शरीयत वालों ने कहा है कि एक आमिल (अनुभवी, अभ्यासी) फकीर की ज़बान से ये लफ्ज़ (वचन) सुन कर लोग शराबी हो जायेंगे। काज़ी हाफिज़ साहब के पास पहुँचा कि महाराज, आपने यह क्या कह दिया? उन्होंने कहा कि मेरे मालिक ने मुझ से जो कहलवाया है वह मैंने कह दिया। काज़ी ने कहा कि इसका मतलब जो हमें समझाइये?

फरमाया, ''जाओ सामने पहाड़ी पर मेरा दोस्त फकीर रहता है, वह तुम्हें इसका मतलब समझायेगा।'' काज़ी उस फकीर के पास गया। वह बोला, ''इसका जवाब तुम्हें कल मिलेगा। आज की रात शहर में किसी वेश्या के यहां बसर करो।'' अब काज़ी हैरान कि एक फकीर कहता है कि शराब से मुसल्ला रंग दे। दूसरा कहता है वेश्या के यहां रात बसर कर ले। चोर का गवाह, गठ कुतरा। खैर गया वेश्या के यहाँ। अब वेश्या कहीं गई हुई थी। उनके यहाँ एक जवान लड़की थी। कंजरों ने उसी को वेश्या के कपड़े पहना कर काज़ी के कमरे में भेज दिया। अब जिसने पाप न किया हो तो पहली बार पाप कर्म करते हुए उसका जी घबराता है। वह लड़की काज़ी के कमरे में आई तो रोने लगी। काज़ी ने देखा कि वह वेश्या होती तो रोती क्यों? पूछा, ''तू कौन है, क्यों रो रही है? वह बोली, मैं मुसीबत की मारी हूँ, आज तक मेरी इज्जत महफूज़ (कायम) थी, आज मैं बरबाद हो जाऊँगी।'' काज़ी ने कहा, घबरा नहीं, अपना हाल ब्यान कर।'' लड़की ने कहा कि मेरी उम्र बहुत छोटी थी, अपने माता-पिता के साथ काफिले में जा रही थी कि डाकुओं ने काफिला लूट लिया और मुझे वहाँ से ले गये और यहाँ इन कंजरों के हाथ बेच दिया। यह बात सुनकर काज़ी को होश आया। इसी किस्म का माजरा (घटना) काज़ी के साथ भी पेश आया था जब डाकू उसकी कमसिन (छोटी उम्र की) लड़की को उठा ले गये थे। काज़ी ने पूछा, ''तेरा वतन (शहर) कौन सा है?'' लड़की ने जिस शहर का नाम लिया वह काज़ी का अपना शहर था। फिर पूछा, ''तुझे अपने मुहल्ले का नाम याद है?'' लड़की ने जो मुहल्ला बताया वह काज़ी का अपना मुहल्ला था। काज़ी ने पूछा, ''तेरे पिता का क्या नाम है?'' लड़की ने जो नाम बताया वह काज़ी का अपना नाम था। काज़ी ने बढ़ के उसे गले लगा लिया। लड़की को कंजरों से छुड़ाकर उसे वह पहाड़ी वाले फकीर के पास ले गया और कहा कि महाराज आप लोगों की रम्ज़ (भेद) को कोई नहीं जान सकता। बात कुछ होती है ज़ाहिरा (बाहर से) कुछ कहते हो। अब मेहरबानी करके अपने कलाम (बात) को साफ कर दो ताकि लोगों को असल बात समझ आ जाये। फरमाया, ''यह हाफिज़ साहब से कहो। वही अपने कलाम को वाजेह (स्पष्ट) करेंगे।'' हाफिज़ साहब ने दूसरा मिसरा (तुक) लगाकर शेयर (छन्द) पूरा कर दिया।

बमै सज्जादा रंगी कुन गरत पीरे मुगां गोयद
कि सालिक बेखबर नबवद जे राहो रस्मे मजिंलहा॥

अर्थात् मुर्शिद हुक्म दे तो शराब से मुसल्ले को रंग दे क्योंकि वह रास्ते के ऊंच नीच को जानता है। वह हर बात से आगाह (परिचित) है। मैदाने जंग (रण भूमि) में कमांडर के हुक्म से कितने ही आदमियों को जान से मार दो, कोई कुछ नहीं कहता। वैसे किसी आदमी पर गोली चला दो तो फाँसी की सज़ा मिलती है। मुर्शिद (गुरु) की बात अगर ज़ाहिरा (बाहर से) समझ न भी आए तो भी उसके हुक्म की तामील (पालन) करो। श्री गुरु रामदास जी ने 74 बार चबूतरे बनाये और गिराये, एक बार भी मन बुद्धि की रड़क ने आई। लोगों ने कहा तो बोले कि अगर गुरु अमरदास सारी उम्र चबूतरे बनवाते गिरवाते रहें तो रामदास सारी उम्र चबूतरे बनाता गिराता रहेगा। तो गुरु रामदास जी फरमाते हैं कि जो गुरसिख बन गया उसे क्या करना चाहिए? पहली बात यह है कि वह गुरु के गुण स्वभाव को धारण करे। दूसरे यह कि गुरु जो आज्ञा दे उसका पालन करे और तीसरे ''हर हर कथा निराली'' जो अन्तर में हो रही है उसे सुने यानी शब्द से जुड़े। हम गुरु के वचनों पर फूल नहीं चढ़ाते, खाली भाग-दौड़ में लगे रहते हैं। हम उसकी खुशी नहीं लेते। अगर हम गुरु के हुक्म पर फूल चढ़ाए तो अपने आप उसकी खुशी हमें मिलेगी और उससे साधन बनेगा। हज़ूर फरमाते थे कि मेरे पीछे-पीछे न दौड़ो, मैं हर एक से मिलना चाहता हूं। इस भाग-दौड़ से कइयों की खुशी रह जाती है, कई पहरे लग जाते हैं। हम discipline में, कायदे में रहें तो महात्मा से बहुत ज्यादा फैज़ (लाभ) हम हासिल (प्राप्त) कर सकते हैं जो बेतरतीबी (अफरातफरी) से हम नहीं ले सकते। उस में दयाभाव होता है, वह सब पर दया करता है। लोग पूछते हैं कि हम गुरु को कैसे प्यारे लगें? उसके गुरु स्वभाव को धारण करो, उसके हुक्म की बजावरी (पालन) करो और भजन सुमिरन में मन लगाओ। ये तीनों बातें इसके लिए ज़रूरी हैं। अब आगे लिखा है – इक रहाओ, अर्थात् यह मुसल्लमा अमर है, यह पक्की बात है, इसे अपने हृदय में धारण कर लो कि जो गुरु के वचनों पर फूल चढ़ाएगा,

उसके कहे मुताबिक अपना जीवन बनाएगा, गुरु के गुण स्वभाव को धारण करेगा और भजन सुमिरन में मन लगायेगा, उसका बेड़ा पार है। कितनी साफगोई (स्पष्ट बात) है।

(5) हर के संत सुणो जन भाई, गुरु सेवो बेग बेगाली॥

कि ऐ भाइयो, मेरा एक मशविरा (राय) मानो कि जल्दी से जल्दी, फौरन से पेशतर, गुरु के चरणों में पहुँचो और गुरु को सेवो। इसी मिनट वहां पहुंचो ताकि इस का फल प्रकट हो जाए। गुरु का सेवना क्या है? दिल में उस का प्यार और अदब रख कर उसके हुक्म पर फूल बढ़ाना, उसके दिल से दिल को राह बनाना ताकि दोनों तरफ एकसी vibration (लहरें उठें) बने। जितनी बार उधर टक टक हो उतनी ही बार इधर भी हो। जिस शिष्य का दिल इस तरह गुरु से मिला हो, फिर चाहे समुद्रों का फासला (अन्तर, दूरी) दरमियान में हों, गुरु उसके पास है। वह हर वक्त उसकी संभाल करता है।

सत्गुरु सिख को जिया नाल सम्हारे॥

सिख (शिष्य) गुरु को याद करता है तो गुरु किस को याद करता है? वह भी अपने सिख को हर वक्त प्यार से याद करता है। आप का लड़का लायक हो तो आप उसे देख कर कितना खुश होते हैं? इसी तरह गुरु भी उस शिष्य को देख के खुश होता है जो उसका हुक्म मानता है।

(6) सत्गुरु सेव खर्च हर बांधो, मत जाणो आज के काली॥

मौत का क्या पता कि आज आ जाये या कल आ जाए। सो जितनी जल्दी हो सके मालिक से मिलने का सफर खर्च पल्ले बांधो। गुरु जो हुक्म देता है कि नेक पाक जीवन बसर करो, भजन सुमिरन में मन लगाओ, यही सफर खर्च है मालिक के रास्ते का। इससे पहले कि मौत आ जाए, गुरु को सेवो। आदमी को चाहिए कि वह किसी का हो रहे। यह उस का बिरद है। वह आप फिक्र करेगा इस की। स्त्री की शादी हो जाये तो उसे कोई फिक्र नहीं रहती रोटी कपड़े का। वह जानती है कि पति आप देगा रोटी कपड़ा।

मुझे याद है एक बार लड़का सख्त बीमार पड़ गया। इतवार (रविवार) को अमृतसर जाना था सत्संग के लिए। सुबह चार बजे गाड़ी जाती थी।

मैंने कहा, ''अगर लड़के ने चले जाना है तो मैं क्या कर लूँगा। सत्संग का काम गुरु का काम है, मैं अपना काम क्यों छोड़ूँ?'' सो मैंने गाड़ी पकड़ी और अमृतसर चला गया। वहाँ दस बजे फारिग हुआ (निपटा), सोचा ब्यास नज़दीक है, चलो हज़ूर के दर्शन भी करते चलो। हज़ूर के चरणों में पहुँचा, माथा टेक कर वहाँ बैठ गया। हज़ूर लेटे हुए थे, उठ के सीधे बैठ गये और पूछा, ''लड़के का क्या हाल है?'' मैंने कहा, ''तकलीफ ज्यादा थी लेकिन वह हज़ूर का काम है। मैं यहां दर्शनों को चला आया हूँ।'' हज़ूर यह सुनकर उदास हो गये। मैंने कहा, ''हज़ूर जो आप का नाम ले उसके सारे दुख दूर हो जाते हैं, आप को किस बात की उदासी है? फरमाया, ''कृपाल सिंह तूने अपना बोझा मेरे सिर पर डाल दिया तो मुझे उठाना पड़ा।''

(7) हर के संत जपो हर जपणा, हर संत चले हर नाली॥

फरमाते है हरि का सुमिरन करो। उठते, बैठते खाते, पीते, सोते, जागते, हर वक्त उसको याद करो। मालिक को कभी न भूलो। वह हरि का सन्त हर वक्त तुम्हारे साथ रहेगा।

जो जिस के मन में बसे, सो तिस ही के पास।

मालिक आप तलाश में है कि कोई प्रेमी हृदय मिले जिस में वह आराम से बैठ सके। सुमिरन (लगातार याद) सीढ़ी है मालिक के पास पहुँचने की।

जिसमें जाकर समाना है उसका हर वक्त चिन्तन करते रहो। As you think so you become जिस का तुम चिन्तन करोगे उस का रूप हो जाओगे।

(8) जिन हर जपेया से हर होए, हर मिलेया केल केलाली॥

फरमाते हैं कि जिन्होंने हरि को जपा वे हरि का रूप हो गये। उन्हें ऐसा हरि मिल जाता है जिसे देख कर नये से नया रंग आता है, जो नये से नया रंग दिखाता है। मौलाना रूम साहब फरमाते हैं जैसे शराबी प्याले में छलकती हुई शराब को देख देख कर मस्त होता है ऐसे ही शिष्य गुरु को देख देख कर मस्त होता है। उसे मुर्शिद (गुरु) में मालिक की शराब छलकती नज़र आती है। हज़रत बाहू साहब फरमाते हैं कि अगर मेरे जिस्म

का एक एक रूआं (रोम) आंख बन जाये और लातादाद (असंख्य) आँखों से मैं गुरु का दीदार (दर्शन) करूँ तो भी—

'मुरशिद वेख न रज्जा हूं'

तो भी मुर्शिद के दर्शनों की मेरी भूख नहीं मिट सकती। गुरु गुरु होता है।

(9) हर हर जपन जप लोच लोचानी, हर किरपा बनवाली॥

हरि को जपने से क्या होता है? उस से मिलने को जी चाहता है। उस की कशिश (खिंचाव) बढ़ती है और यह हालत हो जाती है कि उसे देखे बिना यह रह नहीं सकता। जिसे पाना हो हर वक्त उसे सामने रखो। इस से तड़प बढ़ेगी। जब तड़प बढ़ती है तो उसके हृदय से यह पुकार उठती है कि हे प्रभु! तू दया करके हमें अपने साथ मिला ले। आशिक (प्रेमीजन) दुनिया में रहते हुए भी दुनिया में नहीं रहते। उनकी अपनी नई दुनिया बन जाती है जिस में वे होते हैं और उन का महबूब तीसरा कोई नहीं होता।

(10) जन नानक संगत साध हर मेलो, हम साध जनां पग राली॥

अब प्रार्थना करते हैं कि ऐ मालिक, हमें साधुओं की सोहबत दे। साधु मिल जाये तो मैं अपनी पगड़ी उनके चरणों में रख कर उनके चरणों की खाक में लोट पोट हो जाऊँ। साधु की गति बहुत ऊँची है।

साध रूप अपना तन धारेया।

साधु में वह मालिक आप प्रकट होकर काम कर रहा है, कोई मामूली हस्ती नहीं साधु की। अब इस शब्द में गुरु रामदास जी बड़ी खूबसूरती और सफाई के साथ निर्णय करते हैं कि गुरु मिल जाए तो शिष्य को तीन बातों पर ध्यान देना चाहिए। अव्वल (प्रथम) यह कि वह गुरु के गुण स्वभाव को धारण करे। दूसरे यह कि गुरु जो आज्ञा दे उसका पालन करे, उस के वचनों पर फूल चढ़ाये। तीसरे यह कि भजन सुमिरन में मन लगाये। ऐसे शिष्य का बेड़ा पार है। फिर फरमाते हैं कि जितनी जल्दी हो सके किसी समर्थ पुरुष के हवाले हो जाओ। जो हवाले हो गये वे मुबारिक हैं। जो नहीं हुए वह जल्दी से किसी के हवाले हो जाएँ। अखरोट कच्चा हो तो सुई उस के आर-पार हो जाती है लेकिन यह पक्का हो तो सुई

छिलके में धंस नहीं सकती। जिस हृदय में प्रभु की याद बस गई और दुनिया अन्दर से निकल गई, दुनिया में रहते हुए भी उसे दुख नहीं होता। वह पक्का अखरोट है। ऐसा अखरोट टूट जाये तो उस की गिरी फौरन (तत्काल) छिलके से अलग हो जाती है। ऐसे मनुष्य को मौत का भय नहीं रहता। फिर फरमाया इस शब्द में कि हर वक्त मालिक की याद में रहो। सोते, जागते, उठते, बैठते, खाते, पीते उस की याद करो, उस से मालिक के लिए तड़प पैदा होगी। आखिर में कहते हैं कि साधु की संगत करो। जिन्हें साधु मिल गया, जिन्हें पूरा गुरु मिल गया उन का बेड़ा पार है।

◆◆◆◆◆